

रुस में बदलती संस्कृति के चित्रण का
महान् मानवीय उपयास

और बढ़े

मिखाइल शोलोखोव

अनुवादक

गोपीकृष्ण 'गोपेश'

ज्ञान २...

चौथा खण्ड



राजकमल प्रकाशन

रुस में बदल

© १९६६, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

मूल्य दस रुपये

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली

मुद्रक

एवरेस्ट प्रेस, चमेतियान रोड दिल्ली

हमारी घरती पर हलों की लोके नही है
हमारी घरती पर धोडों की टापों के निशान है—
घोर

हमारी घरती में बीज नहीं,

कड़वाकों के बीज बोए जाते हैं ।

हमारा शांत दोन नद जवान बेवालों से जवान है—

हमारे दोन नद के प्रदेश में फूल नहीं

पतील फूलते हैं—

शांत दोन की लहरों में

हमारे पिताओं और माताओं के आसू तरंगित हैं ।

ओह दोन नद ।

ओह, पिता दोन नद—

तुम बहते हो तो तुम्हारी धार

इतनी गंदली क्यों होती है ?

मैं दोन नद

मेरी लहरियाँ इतनी गंदली भला क्यों हो ?

मेरी गहराइयाँ से शीतल सोत फूटते हैं—

मेरे अंतराल में शांत दोन

बपहली मछलियाँ उछलती हैं ।

एक पुराना कड़वाक गीत

रेजीमेंटो और आगिरी घुड़सवार यूनिटो के साथ जमाव के ठिकानों की तरफ खाना कर दिया गया था।

इस बीच विद्रोही सेनाएँ सभी तरफ से घिर गई। पर वे सजा देने वाली लाल फौजों के हमले को नाकाम करती रही। दक्षिण में, बोन के बायें किनारे पर, दो विद्रोही डिविजनों अपनी खाइयों में डटी रही और उन्होंने दुश्मन को पार पहुँचने नहीं दिया, हालाँकि लाल सेना की बेटरियाँ पूरे मोर्चे पर फैली बहुत ही बेरहमी से उन पर बराबर गोले बरसाती रही। तीन दूसरी डिविजनों ने पश्चिम, उत्तर और पूरब में विद्रोहियों के सीमा क्षेत्रों की रक्षा की। इस सिलसिले में उन्हें बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। उत्तर पूर्वी क्षेत्र में तो नुकसान खास तौर पर ज्यादा हुआ। लेकिन इन डिविजनों ने पीछे हटने की कोशिश नाम की भी नहीं की और खोपरा क्षेत्र की सीमाओं पर यह बड़ी ही मजबूती से अपने कदम जमाये रही।

तातारस्की के कज़ाक, जो अपने गाँव के सामने के नदी किनारे मोर्चा बाँधे रहे उससे लाल फौजों के बीच थोड़ी ध्वराहट पड़ी। दूसरी तरफ कज़ाकों को मजबूर होकर जो रिकम्पन छोड़ना पड़ा उससे वे ऊँच गए। एक रात उन्होंने चुपचाप बजरो पर सवार होकर नदी पार की और दाहिने किनारे पर पहुँचकर, लाल फौजों की एक चौकी अचानक ही हथिया ली चार लोगो को मार डाला और एक मर्गिनगन छीन ली। दूसरे दिन लाल फौजों के घेरे-रखाया के निचले इलाकों से एक बटरी ले आये, और कज़ाक खाइयों पर पूरे जोर शोर से आग छिड़कन लग। तोपों के गाले पेड़ों के बीच फटे तो कम्पनी ने हड़बड़ाकर अपनी खाइयाँ छोड़ दी और कम्पनी के लोग नदी से पीछे हट कर जंगल की तरफ भाग। एक दिन बाद बटरी वापस बुला ली गई और तातारस्की के कज़ाक फिर अपनी अपनी जगह भा डटे। कम्पनी की तोपों के गोलों से थोड़ी बरबादी हुई। हाल की कुमुक के दो जवान गोलों के टुकड़ों से मारे गए और कम्पनी के कमांडर का मदली जख्मी हो गया। वह अभी अभी थोड़े समय पहले घेरे-रखाया से भागा था।

उसके बाद अपेक्षाकृत शांति-सी हो गई, और खाइयाँ की जिन्दगी

बंदस्तूर चलने लगी। अब कज्जाकी की औरतें अबसर ही रात को खाद्यों में आने और रोटी और धर की बनी बोटका अपने साथ लाने लगी। वैसे खाने पीने की यह कोई तकलीफ न थी। कज्जाकी ने दो छुट्टे बछड़ा को मार डाला था। इस पर भी वे हर दिन तालाब पर जाकर मछलियाँ फँसा लाते थे। क्रिस्तोनिया मछली महकमे का मुखिया माना जाता था। किसी शरणार्थी का सत्तर फुट लम्बा जाल उसके हाथ लग गया था और मछली के शिकार के समय वह इसे ताल के गहरे-से गहरे हिस्से में डाल बैठा था। साथ ही बड़ी डींगें मारता था कि नदी-किनारे की सारी चरागाहों में एक भी ताल ऐसा नहीं है जिसमें वह पानी में हिलकर पार न कर सके।

मगर एक हफ्ते की लगातार मछलीमारी से क्रिस्तोनिया की कमीज और 'शारोवारी' कीचड़ से इस तरह चीकट होकर बदबू करने लगी कि अनीकुस्का ने खाई में उसके साथ तटन से साफ साफ इकार कर दिया। बोला—“तुम्हारे बदन से भीठे पानी की मरी हुई, बड़ी मछली की तरह बदबू आती है। अगर मैं तुम्हारे साथ एक दिन और रहा तो किसी मछली को हाथ न लगा पाऊँगा।”

और, फिर, मच्छरी के बावजूद अनीकुस्का खुले में सोने लगा। तो अब खाई की बगल में लेटने से पहले वह जमीन से मछलियों की खाल और अतड़ियों से ऋरी रेत साफ करता और परशानी से नाक भोसिकोड़ता। लेकिन, सबेरे क्रिस्तोनिया मछली के शिकार से लौटता, घात भाव से, मर्यादा के साथ खाई के दरवाजे के पास बैठता और फिर, शिकार की काप मछलियों को साफकर उनकी अतड़ियाँ निकालने लगता। बड़ी मक्खियाँ उसके सिर के ऊपर मेंडराती और पीली चीटियाँ के दल-के-दल घावा सा घोलते। अनीकुस्का हाँफने हुए दौड़ता और दूर से ही चीखता—“तुम्हें कोई दूसरी जगह नहीं मिलती? बास कि तुम्हारी मछलियों की ये हड्डियाँ तुम्हारे गले में जा फँमें। दूर चले जाओ इसा के नाम पर यहाँ से दूर चले जाओ। यहाँ मैं सोता हूँ और तुम हो कि यही चारों तरफ मछलियों की अतड़ियाँ फला रहें। चीटियों की एक पूरी फौज की फौज अपने साथ ले पाये हो, और ऐसा कर दिया

है कि जगह अस्त्राखान की तरह बू बनने लगी है।”

क्रिस्तानिया घर का बना अपना चाकू पतलून के धाँवचों में पाछता, अनीकुस्का के सफ़ाचट नफरत से भरे चेहरे पर विचार भरी दृष्टि डालता और फिर शांत भाव से कहता—“अनीकुस्का, तुम मछलियों की मछक सह नहीं पात। इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पेट में कीड़े हैं। तुम खाली पेट थोड़ा सा सहसुन क्यों नहीं खा लिया करत ?”

इस पर अनीकुस्का झुकते और गालियाँ बकते हुए चला जाता।

इस तरह उनकी जोड़े चलती रहनीं। यो पूरी कम्पनी खासे मल मिलाप से रहती। खान की चीजें बराबर भरी रहती और स्तीपान अस्ताखोव के अलावा बाक़ी सभी बचकाक, मुश नज़र आते।

जहाँ तक स्तीपान का सवाल है, उसने शायद बचकाक से सुन लिया था शायद उसके दिल ने ही उससे कह दिया कि अकसीनिया, व्येगेस्काया जाकर ग्रिगोरी से मिलती रहती है। ओ भी हा, वह अच्छा नक ही कटु हो उठा अकारण ही ड्रूप कमांडर पर बरस गया और उसने पहरेदारी की ड्यूटी करने से साफ़ इनकार कर दिया।

अब वह सारा दिन वाले ब्रड वाले स्लेज बम्बल पर पड़ा माह भरता और घर की उगी तम्बाकू अमापुष फूकता रहता। फिर सहसा ही उसने सुना कि कम्पनी कमांडर अनीकुस्का को कारतूसों के लिए व्येगेस्काया भेज रहा है। इस पर दो दिन में पहली बार वह अपनी खाई से बाहर निकला तो जगने के कारण सूजी आँखा से पानी बहने लगा। उसने सहसाते पेड़ की चमचमाती पत्तियाँ और हवा के झगारे पर आगे आगे दौड़ते, सफ़ेद अयाल वाले बादलों की अविश्वास से देखा और जंगल की ममर ध्वनि सुनी तो उसकी आँखें चौंधियाने लगीं। वह लाइयो के किनारे किनारे अनीकुस्का की साज में बड़ा।

अनीकुस्का मिला तो दूसरे बचकाक के सामने उसने उससे बातें करना पसंद न किया। वह उस एक किनारे ल गया और बोला—“व्येगेस्काया मैं अकसीनिया को तलाशना और उससे मेरी तरफ़ से कहना कि वह फिरन ही थावर मुझमें मिले। उससे कहना कि मेरे बालों में जूँ पड़ गई हैं और मेरी कमीजें और पतलून गंदे हो गए हैं।

साथ ही उससे यह भी कहना " स्तीपान धबराहट से मूछा-ही मूछा मुस्कराते हुए एक क्षण को चुप रहा और फिर अपनी बात खत्म करते हुए बोला— 'कह देना कि उससे मिलने के लिए मैं बहुत ही बेचैन हूँ मेरा दिल बहुत तड़प रहा है ।'

अनीकुशका न घाघी रात को ब्येशे-स्काया पहुचकर अकसीनिया का ठिकाना खोज निकाला । वह त्रिगोरी से हुई कहा सुनी के बाद अपनी चाची के यहा रहने लगी थी । अनीकुशका ने स्तीपान के पैगाम का शब्द कह सुनाया और फिर बात में बज्रन लाने के लिए, अपनी तरफ से बोला— "स्तीपान ने कहा है अगर तुम न गई तो वह खुद यहाँ आयेगा ।"

अकसीनिया ने पूरी बात सुनी और लौटने की तयारियाँ करने लगी । चाची ने आटा भिगोया और आटे के उठने पर केकें तैयार कर दी । दो घंटे बाद अकसीनिया, अनीकुशका के साथ तातारस्की कम्पनी के पड़ाव की ओर रवाना हो गई ।

स्तीपान ने अपने मन की उत्तेजना मन में ही रखते हुए अपनी पत्नी का अभिवादन किया । उसने अब पढ़ने की कोशिश की तो उसे अकसीनिया का चेहरा कही हलका लगा । अब उसने बड़ी ही सावधानी से स्वास्थ्य सम्बन्धी पूछताछ की और त्रिगोरी से मिलने या न मिलने की बात गलती से भी न उठाई । बातचीत के दौरान सिर्फ एक बार, मालिं भीची किये और मुह दूसरी ओर की मोड़ते हुए, उसने पूछा— 'लेकिन, तुम उधर से ब्येशे-स्काया क्या नहीं गई ? तुमने तातारस्की के सामने से नदी पार क्यों नहीं की ?'

अकसीनिया ने लुशकी से जवाब दिया— 'अजनबिया के साथ नदी पार करने का मुझे मौका नहीं लगा और मेलेखोवा के यहाँ जाकर कुछ पूछता मैं ठीक नहीं समझा ।' और, बात मुह से निकलते ही औरत ने समझा कि मेरी बात का मतलब यह है कि मेनखोव मेरे लिए अजनबी नहीं हैं, बल्कि अपने ही हैं । पर उसने चिन्ता नहीं की कि स्तीपान भी इन शब्दों का यही अर्थ सगायेगा या नहीं । शायद स्तीपान

ने ठीक ही समझा, क्योंकि दाण भर को उसकी ओर कपि गई और उसके चेहरे पर एक रंग आया और एक रंग गया।

स्तीवान ने प्रश्न भरी आँखें उठाई। अक्सोनिया ने सवाल समझा और अदर की परेशानी और खीझ के कारण उसका चेहरा एकाएक लाल हो गया।

स्तीवान, पत्नी की परेशानी बचाने के लिए, यों बना जैसे कि उसने कुछ देखा ही न हो और बात बदल दी। फाम की चर्चा की। पूछा—“घर को छोड़कर आते बकन कौन कौन सी चीजें छिपाकर रखी? और कायदे स छिपा भी दी या नहीं?”

अक्सोनिया ने अपने पति की उदारता अदर ही अदर सराही और उसके सवालों के जवाब दिए। पर उसके मन में एक काँटा सा बराबर चुभता रहा। सो उसने अपने अदर की उबल पुपल पर पर्दा डालना और अपने पति को इस बात का विश्वास दिसाना चाहा कि जो कुछ हुआ, वह या ही है, उसकी ऐसी कोई अहमियत नहीं है। इसके लिए उसने जो कुछ कहा वह जान-बूझकर व्यवस्थित ढंग से, धीरे धीरे, तौल-तौलकर कहा।

इस तरह दोनों सार्ई म बठे बानें करते रहे। पर बरजाव उनकी बातचीत में रह रहकर बाधा डालते रहे। पहले एक आदमी अदर आया और फिर दूसरा। क्रिस्तोनिया आया तो फौरन ही सोने की तयारी करने लगा। स्तीवान ने अकेल म बातें करने का मौका न पाया सो न चाहते हुए भी बातचीत थोड़े म ही खत्म कर दी।

अक्सोनिया के मन से बोझ उतरा। वह सुप्त सुप्त उठी, पुलिदा खोला, बेका से पति की गोद भर दी और उसके फीजी बढल से गदे बपड़े निवाल और पास के दस्तखती ताल पर धोने को धन दी।

तब के सनाटे में स्पहला मूरी घुघकी एक चानर सा जगल ब ऊपर तनी रहा। पास की पत्तियाँ, भोग की बूंदो ब बोझ स जमीन पर मुक मुक गई। लाल म मलक अपनी बेसुरी टर-टर छेड़े रह। सार्ई के पास मेपल की घनी भाटी के पीछे वहाँ कोई रेत बिटिया बबदा ध्वनि करती।

अकसीनिया भाड़ी की बगल से गुजरी । भाड़ी के सिरे से तो तब, नीचे की घास फूस के अंदर, भूँडो के जाले एक दूसरे में उलझे रहे । उनके तार मोस की भलाभल बूंदो से सजे रहे और ये बूँदें पानीदार मोतियों की तरह चमचमाती रही । रेल चिड़िया कुछ क्षणा को चुप रही और अकसीनिया के पैरों के नीचे दबी घास की पत्तियों के सीधे होने के पहले पहले फिर जोर से बोलन लगी । दूसरी ओर दलदल के पार उड़ती टिटहरी जवाब में अपने स्वरों में उदासी धोलने लगी ।

अकसीनिया ने हिसने डुलने की आसानी के लिए अपना झलाउज और चोली उतारकर एव ओर का फेंक दी, ताल के भाप उगलने, गम पानी में घुटना घुटनों तक हिंसी और बपड़े धोने लगी । उसके सिर के ऊपर छोट मोट बीड़ा क दलों से घिरे मच्छर भनभनाने लगे । उन्हें हटाने के लिए उसने भरा हुआ साबुन हाथ चेहरे पर फेरा ।

इस समय उस शिगोरी और शिगोरी से हुई कहा सुनी का खयाल रह रहकर आने लगा ।

वह तो कभी से मेरी तलाश कर रहा होगा । मैं आज ही रात को ध्येनेस्काया लौट जाऊँगी । उसने दृढ़ता से निश्चय लिया और उसके होंठों पर मुस्कान दोड़ गई कि मैं फिर शिगोरी से मिलूँगी और हमारे बीच समझौता हो जाएगा ।

सारा कुछ विचित्र रहा । इधर अकसीनिया ने जब भी शिगोरी की कल्पना की, एव ऐसा नवशा खींचा, जो उसका होकर भी सचमुच उसका न रहा । आज का शिगोरी शक्ति और शीघ्र का अवतार बख्दाक उसकी आँखों के सामने कभी आया ही नहीं । इस आदमी ने तो जाने कितना-कुछ देखा सुना और सहा था । इसकी आँखों में शकान थी, काली भूँडों की नोकों पर जग सी थी, कनपटियों पर उम्र के पहले ही सफेदी दोड़ गई थी और भाँये पर गहरी लकीरें थी । यह सारा कुछ इतने इतने वर्षों की लड़ाई के कठिन जीवन के अभिष्ट निशानों का लेसा था ।

अकसीनिया के मानसपटल पर तो सदा ही उसका पुराना, गुरु का प्रीति मेलेखोब—जवानों से भरा, अपने प्यार दुलारी में भी अल्टू और भद्रा—पतली, गोख गदन—होंठों पर बफिफो से घिरकती स्याबहार

मुस्कान ! यही नहीं इन विरोधताओं के कारण ही उसे उस पर ज्यादा स-ज्यादा प्यार आया और उसने उसके प्रति माता-सुलभ स्नेह और कोमलता का भी अनुभव किया ।

और इसीलिए इस समय भी गिगोरी की एक एक विरोधता स्पष्टतम रूप में जो अकसीनिया के सामने आई और उसे बेहूँ बेशकीमती लगी तो वह बुरी तरह हाँफने लगी । उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी । वह तनी । उसे अपने गले में कुछ भटकता सा लगा । प्यार के भाँसू पलक से दुसक चले । उसने अपने पति की आधी धुली कमीज नीचे पटककर पैरों से रौंती और फुसफुसाती हुई बोली—“बुरा हो तेरा, तू तो हमें-गा हमें-गा के लिए मेरे दिल में समा गया है प्रीतवा ।”

भाँसुमा से दिल हलका हुआ, पर बाद में उसके चारों ओर की सवरे की पीली नीली दुनिया सहसा ही रमा में बुझने लगी । उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से गाल पोछे । अपनी गीली भोंहो से गाल पीछे भटक और बहुत देर तक विचार गूँथ सी एक जलमूर्गी को देखती रही । जलमूर्गी पानी पर फिसली और फिर हवा में उमड़ती धुप की गुलाबी कसीदेकारी के बीच खो गई ।

अकसीनिया ने बपड़े धोये, उन्हें भाँडिया पर फलाया और लाई को लौट दी ।

क्रिस्तोनिया सोकर उठ गया लाई के प्रवेश के पास बैठा अपने गाँठ गेंटीले अगूठे ऐँठ रहा था और स्तीपान को छेँ छेड़कर उससे ज़रूरदस्ती बातें करने की कोशिश कर रहा था । स्तीपान कम्बल पर लट्टा चुपचाप घुमा उठा रहा था और क्रिस्तोनिया ने सवाल के जवाब देने से बच रहा था । भाँखिरदार क्रिस्तोनिया बोला—

तो, तुम्हारा खयाल है कि साल फौजी नदी पारकर इस तरफ नहीं आयेंगे ? जवाब बयो नहीं देते ? एर, नहीं देना चाहते जवाब, तो न दा । लेकिन, मेरा अपना तो खयाल यह है कि वे बटाव की तरफ से नदी पार करेंगे वहाँ से नदी पार की जा सकती है, और कहीं से पार करना उनके बस की बात नहीं है “गाय” तुम सोच रहे हो कि वे अपने घुड़सवार नदी के पानी में हिला देंगे क्यों ?

घोने क्यो नही, स्तीपान ? ऐसा लगता है कि आखिरी मोर्चा पही बंधेगा । और तुम हो कि लकड़ा के बूदे की तरह पसरे पड़े हो ।”

स्तीपान आघा उठकर बैठ गया और गुस्से से भरकर बोला—‘तुम मेरी जान के पीछे क्या पड़े हुए हो ? तुम सब, अजीब मजाकिया लोग यहाँ जमा हो । यानी मेरी बीबी मुझसे मिलने आई हो और तुम हो कि मुझे मास नहीं लेन दते । यानी तुम दुनिया की बकवास करते चले जाते हो और मुझे अपनी बीबी से दो बातें नही करने देत ।’

“अच्छा है तुमन मुझ कोलकर अपने दिल की बात ना कही ।” क्रिस्तीनिया बिगड़कर उठा नगे परा पर सडिल चढ़ाये और दरवाजे के सिर से अपना निर टकराता बाहर चला गया ।

‘यहा तो इन लोगा के बारे हम बातें करने का मौना मिलने सरहा । आओ जगल में चलें ।’ स्तीपान अकसीनिया से बोला और उसके जवाब का इंतजार किये बिना दरवाजे की ओर बढ़ चला । अकसीनिया आंखिरी से पीछे पीछे चल दी ।

शाना दोपहर को आई में वापस आय । आल्डार की भांडी की ठगी छाँव में लेटे, दूसरट्ट प के बरजाका ने अकसीनिया और स्तीपान को देखा ता तांग के पते एक तरफ को रख दिए और एक-दूसरे को देख देखकर आँखें मारने, हँसन और जोर जोर से आह भरने लग ।

अकसीनिया अपना गाजा हुआ लसवाला सकेर रुमाल कसती और नगरत से हाठ बिचराती इन पीजिया के पास में गुजर गई । किसी ने उससे कुछ नहीं कहा । सबिन स्तीपान उसकी पीछे-पीछे इनके पास पहुच भी न पाया कि अपनी कुत्ता उठा टोली से बाहर आया बनावटी ढंग से आदर जियलान हुए स्तीपान के सामने झुका और जोर से बोला, ‘एन के लिए मुआरकाल, अब तो राजा टूट गया न ?’

स्तीपान सहज भाव से मुस्कराया । उस खुशी हुआ कि बरजाका ने उस उमकी बीबी के साथ जगल से सौटत दख लिया । मन ही मन सोचा अरुदा हुआ । अब यह अणवाह तो कम होगी कि मेरी अकसीनिया से बनती नही ।

उसमें तो जाना जियलान के लिए अपने मन तक भटके और

सतोष की मांस लेत हुए पीठ पीछे कर दी। कमोज का पिछला हिस्सा अब तक पसीने से तर दीखा।

इस तरह स्तीपान के व्यवहार में कबजावा को बढावा मिला और ये हँसने और तरह तरह की आवाजें नी करन लगे।

‘लेकिन औरत गम है प्यारो’ स्तीपान की कमोज आसानी से उतरेपी नहीं, पसीन से ऐसी तर है कि कपा से चिपक गई है।

‘औरत न सारी खाई पी निकास ली है—हर जगह से पसीने पसीने हो रहा है मुँह से भाग छूट गया है।’

एक जवान की खुशी में भरी निगाह खाई तक अकसीनिया का पीछा करती रही। बाद में वह बड़ी हसरत से बोला—‘दुनिया भर में दूँ आधो बही ऐसी हमीन औरत मिलगी नहीं नीली छतरीवाला मुँके अकसीनिया’ माफ़ करे।

इस पर अनीबुश्वा ने तक सामने रखा—‘ऐसा क्यों कहते हो? तुमने खोजने की काशिश की है अभी?’

अकसीनिया ने ये सारी उल्टी सीधी बातें सुनी तो उसके चेहरे का रंग धाँडा उड़ गया। खाई में घँसी तो अपने पति और अपने बीच की झूल की घनिष्ठता और उसके साथियों की सुबचपन से भरी बातों के स्तीपान से उमकी ओह तन गई और उमका अंतर घणा से भर उठा। स्तीपान ने दूमरे ही लण पूरी बान भाँपी और मनोनी करत हुए बोला—‘य आदमा नहा स्टनियन घाटे हैं। इनकी बातों पर नाराज न हो और बान यह है कि ये गुरू औरतों के लिए तरस रहे हैं।’

‘केरा एसा कोई नहीं जिसमें मैं नाराज हो सकूँ।’ उसने अगन धले में हाथ डालत हुए, चुम्के हुए तिल से बड़ा और पति के लिए साई गई सारी चीजें जली जली निकालकर सामने रख दी। फिर, और सधे हुए स्वर में बानी—‘मुँके नाराज तो सिर्फ अपने आपस हाना चाहिये, लेकिन इससे लिए कनजा भरे पास नहीं है।’

फिर कुछ ऐसा हुआ कि उन दोनों ने सामने जलचीत करने के लिए जंगे कुछ बचा ही नहीं। कोई दग मिनट बाद अकसीनिया उठ खड़ी हुई।

‘मैं इससे बह दूगी कि मैं व्यशे-स्काया लौट जाऊँगी। उसने सोचा, लेकिन इसी समय उसे खयाल आया कि सूखे कपड़े तो वह उठाकर लाई ही नहीं।

फिर वह आई के दरवाजे के पास बठी अपने पति की पसीन से सही कमीजें और पतलून ठीक करती रही। इस बीच रह रहकर उसने आँखें उठाई और क्षितिज की ओर जाते सूरज पर निगाह डाली।

इसके बावजूद उस दिन वह वहाँ से नहीं गई। उसका हियाब ही न हुआ। लेकिन, अगले दिन सवेरे सूरज उग भी नहीं पाया कि उसने तयारी शुरू कर दी। स्तीपान न उसे बहुत रोका, ज्यादा नहीं तो एक दिन और रुकने की भिन्नता की। लेकिन, अकसीनिया ने इतनी दृढ़ता से नहीं की कि आगे उसने कुछ नहीं कहा। सिर्फ चलते वक़्त बोला, “तुम्हारा इरादा क्या व्यशे-स्काया में रहने का है।”

‘ हाँ, फिलहाल तो है।’

‘तुम यहाँ मेरे पास नहीं रह सकती।’

‘यहाँ कज़ाको के साथ रहना, मेरे लिए अक्म की बात नहीं है।’

‘गायद तुम ठीक कहती हो।’ स्तीपान ने पत्नी की बात का समर्थन किया, लेकिन उसने पत्नी को बिदाई बहुत ही भावहीन ढंग से दी।

हवा दमिण पूर्वी थी। दूर से आई थी और रात में थक सी गई थी। पर सवेरा हान का समय हाते हाने वह फिर ट्रास-वस्त्रियन रेगिस्तान की उमस और गरमी दोन के इलाके में ला साकर उड़ेलन लगी और बायें किनारे की पानी से भरी चरागाह के टुकड़ों पर टूट-टूट पड़ने लगी। उसने ओस सोख ली, धुँध उड़ा दी और दोन-क्षेत्र की पहाड़ियाँ की गड़ियावाली चोटियों को गुलाबी कुहरे से भरे दिया।

जंगल में अक्म भी ओस थी। इसलिए अकसीनिया ने सडल उतार लिए, अपनी स्कट का सिरा बायें हाथ से पकड़ लिया और जंगल की एक मूनी सडक में बिनारे किनारे घोंरे घोंरे चल दी। उसका पैर गीली धरती पर पड़ता तब उस बहुत ही अच्छी लगती। दूसरी ओर, खुदक हवा उसकी मोटी, नगी पिडलियों और गदन को रह रहकर चूमती रही।

अकसीनिया खुले मदान म इग्लैण्टाइन फूलो स भरी भाडी के पास बठ गई और आराम करने लगी। कहीं पास ही आगे सूखे ताल के सरपता व बीच बत्तखें सरसराने लगी और एक नर वत्तख न भर्राय गले से अपनी मादा को आवाज दी। दोन के पार मगीनगनें धीरे धीरे मगर घरावर खडखडाती रही। बीच बीच में तापें भी गरजती रही और मोलो व घडावा की गूज इस पार सुनाइ पडती रही।

इसके बाद गालाबारी का तार बीच बीच में टूट भी गया और घरती की सारी छिपी हुई आवाज अकसीनिया व काना में एक साथ बजने लगी। (अखराट व किस्म व) एक पक्ष की सफा किनारियो वाली हरा पतिया और घाहलून व फफूली लगे नकनाशीदार पत्ते हवा में जोर जोर से खडखडाते रह। ऐस्प व नये पक्षों के झुरमुट से स्थिर गति से सरसराहट होनी रही। दूर, बहुत दूर कोई उल्लू किसी की जितनी व बचे-खुब साला की गिनती बहुत हलक हलके करता रहा। ताल के ऊपर से उडती एक टिटहरी पीबिट पीबिट करती रही। अकसीनिया स दो कदम के पासले पर कोई भूरी चिडिया अपनी गदन जरा जरा पीछे की ओर भटकत और खुनी स पलकें भगकाते हुए, सडक के छोटे गढे में पानी पीती रही। गहल की मलमली गद से नहाई बड़ी मकियाँ मनभनानी रही। सावनी जगली तितलियाँ चरा गाही फूना की पलुडिया स रह रहकर टकरानी और मधुमय पराग घुरा घुराकर उडती रही। दयारामो की शाखा स रस टपकता रहा और हापन भाडा व नीचे से पतिया की सडायव आती रही।

अकसीनिया स्थिर बठी जगल की तरह-तरह की महका स अपनी साँसें साचना रही। जगल का स्वाभाविक सहज जीवन, अनगित्त सुरील गठ स मुखर हाता रहा। बमत व पानी की बाढ स सोभी चरागाह का मिट्टा में तरह-तरह की घासा की पतियाँ उगनी रही। सो पूला और जडा फूटियों व रस मायाजाल का दगकर अकसीनिया का मुह अचरन स खुना का खुला रह गया।

उमन मुक्करान और बिना आवाज व हाठ चलान हुए अनाम पीले, नीले, छोट छोट फूलों व डल्लों का सावजाना स छुपा और फिर उह

सूघने के लिए अपनी कमर लचकाई। सहसा ही घाटी के लिली फूलों की उमाद में भरी महक उसके नथुनों में घा मरी। उसने हाथ से टटोलते हुए पीघा खोज लिया। पीघा उसकी बगल में, दाइ ओर एक अभेद्य छायादार भांडी के नीचे उभा नजर आया। कभी की हरी, चौड़ी पत्तियाँ झुके हुए, वफ में सफेद फूलों के मधु पात्रों से लदे नीचे के डठल को इस समय भी मूरज में बचाती दीर्घी। पर, ऊपर, मोस और पीली जग के पदों में के खुद अंतिम साँस लेती ज्यों धीरे भीन फूलों को रह रहकर अपनी ठंडी उँगलियों से छूनी रही। एक जगह नीचे के दा फूलों के चेहरे झुरिया से भरे और सवराए समझ पड़े। सिर्फ ऊपर का एक फूल मोस के झलाझल मांसुषा से नहाया, सहसा ही धूप में कोंघा। उसके गहरी रंग न ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

अकस्मीनिया भरी भाषा से इस समय इन फूलों को देखती और इनकी उदासी से भरी महक का सुख लेती रही कि पता नहीं क्यों उसकी जबानी और पूरी जिदगी आँखों के आग साकार हो उठी। इनकी सम्झी जिदगी सुख के क्षणों की गिनती की दृष्टि से बहुत ही छोटी लगी। मन ने कहा—‘अब तू गायद बूढ़ी हो रही है भला कोई जवान औरत भी यही ठिठककर आँसु सहनती है क्योंकि उसे कोई भूली कयनी याद भी आकर रह जाती है।’

उसने मांसुषा से नहाया चेहरा हाथों से खिगा लिया और नीले गाल पर ह्मास रख लिया। फिर रीत रीत सा गइ।

हवा और तेज हो गई और देवदार और बेंतों के सिरों को पश्चिम की ओर झुलाने लगी। एम्प वृक्ष का पीला तना उन्नी हुई पत्तियों के कपूरी अधर में लिपटा, हवा में लहराने लगा। अकस्मीनिया जिसके नीचे सोनी रही, उस फूल से भरी इग्नटाइन की भांडी पर हवा उतरी। हरी, जादूई बिडिया के चोंके हुए दल की तरह पत्तियाँ उत्पुक्तता से सरगरान और गुलाबी परोसी पत्तुडिया की हवा के भीरो को सोंपने लगा। अकस्मीनिया पर इग्नटाइन की ये मुरभाई हुई पत्तुडियाँ बरमती रही और वह इस तरह सोनी रही कि न तो जगल के मुजर स्वर उनके बाना में पड़े, न दोन पार गोलागरी

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नये सिर पर सीधी पटती सूरज की किरणों की गरमा ही अनुभव हुई। वह जगी तो तब जगी जब किसी आत्मी की आवाज और घाटे की हिनहिनाहट उसके कानों में पड़ी। फिर तो हड़बड़ाकर उठकर बैठ गई।

उसने देखा बगल में खड़ा एक जवान बरजाक—मुखें सफे— दाँत मोती की तरह उजले— कसे हुए सफेद नाक वाले घाटे की लगाम हाथ में। बरजाक खुलकर मुस्कराता बड़े अकृता, पर पटकता और भरपूर गले, मगर प्यारे ठग से एक गीत गाता रहा—

घरती पर ठही रही,

बनसी त देखा—

बभी उघर और फभी हघर का—

काई नहीं ऐसा जो हाथ मुझे दे दे

किस्मत में बदा एक ऐसा भी दिन था—

सबिन फिर मैंने जो देखा पलटकर—

पास खड़ा पाया बरजाक एक सुंदर।

‘मुझे मदद की जरूरत नहीं मैं या भी उठ सकती हूँ।’ अक्सीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्फट ठीक करती हुई पूर्वी से उछलकर खड़ी हो गई।

‘वहो मेरी रानी बात क्या है? पैरा ने घागे बदन से इनकार कर दिया या वो ही आसम आ गया?’—खुशी से खिले बरजाक ने उसका अभिवादन किया।

‘या ही नींद आ गई।’ अक्सीनिया ने गम से सात होते हुए जवाब दिया।

‘येने स्वाया जा रही हो?’

‘हाँ।’

‘मैं तुम्हें अपने साथ ल चलूँ वहाँ?’

‘सबिन किस पर?’

‘तुम घाटे पर सवार हो जाओ। मैं पदल ही चना चमूगा। यह भी गूँध पर महरबानी होगी मुम्हारी’ जवान बरजाक ने आस मारी।

“नहो, तुम जाओ ईश्वर तुम्हारी मदद करे मैं या हो पैरों-परा अपनी मजिल तय कर लूगी।”

लेकिन, कड़वाक इक और ज़िद के मामले में खिलाड़ी साबित हुआ। अकसीनिया अपने सिर के रुमाल का ठीक करने में उलझी तो उसने इस क्षण में फायदा उठाया। उस छोटे पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और घूमने की कोशिश की।

‘बेवकूफी न करो।’ अकसीनिया चीखी और उसकी नाक की ठोक पर कुहनी मारी।

‘मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, घास पाम की दुनिया किन्नी प्यारी कितनी हसीन है। हर एक भरने जोड़े की तलाश में है - ऐसे में हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से क्यों परहेज करें और क्यों बचें और कड़वाक अपनी खुशी से चमकती आँखें मिटा देने और अकसीनिया की गदन को अपनी मूछा से सहलात हुए धीरे से बोला।

अकसीनिया का गुस्सा जैसे उनार पर आ गया। पर, उसने अपने हाथ छुड़ाये और कड़वाक के भूर पसीन से तर चेहरे का पीछे ठेलते हुए अपने को आज़ाद करने की कोशिश की। मगर सटन पकड़ ने जुम्बिश नहीं छोड़ी।

‘गधे हो तुम। तुम्हें पता है मुझे बहुत ही गंदी बीमारी है - छोड़ दो मुझे।’ अकसीनिया ने हाँफते हुए मिनत की और मोचा कि इस मामूली सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी।

‘उफ लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है।’ कड़वाक ने दाँत भींचे ही भींचे कहा और सहमा हो उसे पाद में उठा लिया।

अकसीनिया की सचानक ही लगा कि मज़ाक खत्म हो गया और अब तो मामला गम्भीर तबल से चला। सो, उसने कड़वाक की भूरी घुप में सँवराई नाक पर भरपूर घूमा जमाया और अपने को जकड़ने वाल हाथा को भटककर दूर कर दिया। बोली—‘मैं ग़िरगारी मलेखोव की बीबी हूँ। तुम्हारी इनती हिम्मत कि तुम बदनीयती से मेरे पास फटक भी जाओ। कुत्रिया के बच्चे कहाँ के। मैं उससे सारा सुख

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नगे तिर पर सीधी पड़ती सूरज की किरणों की गरमी ही अनुभव हुई। वह जमी ता तब जमी जब किसी छात्रों की आवाज और घोड़े की हिनहिनाहट उसके कानों में पड़ी। फिर तो हड़बड़ाकर उठकर बैठ गई।

उसने देखा बगल में खड़ा एक जवान बख्तावर—मुखें सफेद दाँत मोती की तरह उजले वैसे हुए, सफेद नाक बाल घोड़े की लगाम हाथ में। बख्तावर खुलकर मुस्कराता बड़े झकझका पैर पटकता और भरांगे गल, मगर प्यारे बगल में एक मीन गाता रहा—

घरती पर डही रही,

बनसी से देखा—

कभी उपर और कभी इपर को—

बोई नहीं ऐसा जो हाथ मुझे दे दे

किस्मत में बदा एक ऐसा भी दिन था—

लेकिन फिर मैंने जो देखा पलटकर—

पास खड़ा पाया बख्तावर एक सुन्दर।

‘मुझे मदद की जरूरत नहीं, मैं या भी उठ सकती हूँ।’ बख्तीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्फट ठीक करती हुई पूर्वी से उछलकर खड़ी हो गई।

‘वहो मेरी रानी बात क्या है? परा ने आगे बढ़ने से इनकार कर लिया या मोही भालस आ गया? —खुशी से खिले बख्तावर ने उसका अभिवादन किया।

याही नींद आ गई।’ बख्तीनिया ने गम से लाल होते हुए जवाब दिया।

‘मेरे स्वाया जा रही हो?’

‘हाँ।’

‘मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँ वहाँ?’

‘लेकिन किस पर?’

‘तुम घोड़े पर सवार हो जाओ। मैं यहाँ खड़ी चलाऊँगी। यह भ्रम पर महारानी होगी तुम्हारी।’ ‘जवान बख्तावर ने आँख मारी।

"नही तुम जाओ इस्वर तुम्हारी मदद करे मैं यो ही पैरों-पैरा अपनी मजिल तय कर लूगी।"

लेकिन, बज्जाक इ'क और ज़िद के मामले में बिलाही साबित हुआ। अकसीनिया अपने मिर के रुमाल को छीक करने में उन्मत्त तो उसने इस क्षण में फायदा उठाया। उसे छांटे पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और धूमने की कोशिश की।

"बकूफी न करो!" अकसीनिया चीखी और उसकी नाक की नोक पर कुहती मारा।

"मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, घास घास की दुनिया किननी प्यारी कितनी हसीन है हर एक अपने जोड़े की तलाश में है - ऐसे मैं हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से बचो परहज करें और क्यों बचें और बज्जाक अपनी खुशी से चमकती आँखें सिकाटन और अकसीनिया की गदन को अपनी मूँछों से सहलाते हुए धीरे से बाना।

अकसीनिया का गुस्मा जैसे उतार पर आ गया। पर, उगने अपने हाथ छुड़ाये और बज्जाक के भूरे पसीन से तर चेहरे का पीछे टेकते हुए अपने को आजाद करने की कोशिश की। मगर सन्त पकड़ न जुम्बित नहीं खाई।

गये हा तुम! तुम्हें पता है, मुझे बहुत ही गंभीर बीमारी है - छोड़ दो मुझ। अकसीनिया ने हाँफते हुए मिनत की और साचा कि इस मामूली सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी।

'उफ़ लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है।' बज्जाक ने दाग भीचे ही भीचे कहा और सहसा ही उग्र गान में उठा लिया।

अकसीनिया को अचानक ही लगा कि बज्जाक गम्य हो गया और अब तो मामला गम्भीर शकल ले चला। सा, उसने बज्जाक की भूरी घूप में सँवराई नाक पर भगपूर घूसा जमाया और अपने बा जकड़ने वाले हाथ का भटककर दूर कर दिया। बानी— मैं प्रियारी मेलेछोव की बीवी हूँ। तुम्हारी इनकी हिम्मत कि तुम बन्नीयती से परे पाप पटक भी जाओ! बुनिया के बच्चे कहीं के। मैं उससे तारा कृष

४ घीरे वह दोन रे

सा दूगी और वह तुम्हारी हट्टी 'मली'

पर उस लगा कि उसकी बाता का बज्जाक पर असर कुछ न होगा।
लिए उसने लपककर एक मानी सी सूमा लकड़ी उठा ली। लेकिन
बजाक का सारा जोश त्यजते दखते ठण्डा पड़ गया। उसने नाक
बहकर गलमुच्छो पर आन खून की अपनी खाकी बमोज की घास्तीन
पाछा और दद से तड़पत हुए बोला— बबरूफ कही की। बिम्बुल
। बेधक औरत हा तुम। तुमन यह बात पहले ही क्या नहीं कही ?
फ, देखो तो कसा खून यह रहा है। दुश्मना ने जसे कुछ रियायत
रत दी है कि अब खुद बजाक औरतें हमारा खून बहाने पर उतर
ई हैं।

बजाक का नेहरा एकाएक टूट पड़ गया और सारी मोहकत
रम हो गई। वह सड़क किनारे ब एक गड्ढे में पानी ल लेकर खून
फ करने लगा कि बकसीनिया तेजी से मुझे और हवा की तरह मगान
र करने लगी। कोई पौध मिनट के अन्दर बदर बजाक बराबर से
गया। फिर औरत की बनली में देखता, चुप चुप मुस्कराता, अपनी
इफल के सीने पर पड़े पीत की कापटे से ठीक करता और अपने
। डे का दुलकी चाल से दीकाना आगे निबन गया।

२

उस रात साम पीज न लकड़ी ब तेलो और कुण्डों के घेडा पर
न नदी पार की, और वे एक छाटी भापडी के पास आ निक्ले।

भापडी के बजाक पर अनायास ही बिजली सी टूट पड़ी क्योंकि
जम से अधिकांग रगरेलियां मना रहे थे। तीसरे पहर से ही उनकी
लेकियां आनी और अपने साथ घड़े घड़े और बाल्टी बाल्टी भर धर की
। नी बोदवा लानी रही थीं। आधी रात होते होन वे अपने आप में न रह
। ए थे, मानो नग म घुत औरतों की चींग पुतारो और मर्तों ब हूंगी के
। आका और सीनिया की आवाजें साहयो म आ रही थी। पहले की ड्यूटी
। र सनात बीम बजाक ने भी इस गगनगारी में हिस्सा लिया था।
। मफ हो तोपची और एन बाल्टी बोदवा मगीनगन के पास छोड़ दी थी।

साल पीज में बड़े, सनाट स भरे, दोन के दाहिने किनारे से

चले । गाल फौजी सामन के किनारे पर उतरे और एक एक दो-दो के क्रम में खाइया की और बहे । खाइया नदी से कोई दो सौ कदम के प्रामल पर थी ।

बड़े बनान वाले फौजी इंजीनियर लाल फौजिया की दूसरी टोली को लाने के लिए अपने बेटों पर तेजी से वापस लौट गये ।

बायें किनारे पर गात्र के झुटपुट स्वरा के अलावा पांच मिनट तक कोई आवाज नहीं सुनाई न पड़ी । इसके बाद हयबम फटने लगे, मशीनगन सड़कदान लगी, राइफलों से गोलियाँ बरसने लगी और रात के सप्ताटे में दूर-दूर तक दूरा दूरा का गोर गूजन लगा ।

टुकड़ी बोलला उठी और उमक पूरे-पूरे लोग बरखादी से मिफ इसलिए धके कि घटाटोप अघवार में लोगों का पीछा नहीं किया जा सका ।

कमराबों का कोई बहुत नुकसान न हुआ, उनके बीच खलबली मच गई और वे अपनी अपनी औरनों को लिये दिये, चरागाहें पार कर उल्टे सीधे ब्यंगम्काया की ओर गये । पर, इस बीच बड़े लाल फौजियों की नई टुकड़ियाँ से आये और १११वीं रेजीमट की पहली बटेलियन की आधी कम्पनी का हलकी मशीनगनों से लैस होकर, घातकी के किनारे से बागी स्वरुद्धन को भूत लगी ।

इस तरह जो दरार बनी उस घाटन के लिए ताजा कुमुक लाई गई । लेकिन, इन फौजों की रणभार घीमी रही क्योंकि किसी भी लाल फौजी को जगह का पता न रहा । यूनिटों के पास गाइड नहीं रहे और धंधेरे में अंधा की तरह आगे बढ़ने हुए उनके सदस्य नाता और बाढ़ के पानी की तेज धारों में रहे रहकर भहरात और फसते रहे । बाढ़ के पानी को काटा न जा सका ।

हमने का निर्देशन करने वाले त्रिमेड कमांडर ने लोगों को सदेहने का सवाल तब तक के लिए उठा रखा । इस बीच रिजर्व फौजों सा-साकर ब्यंगे स्वाया के रास्तों पर जमाद गई और तप्रा की तयारी का काम ले दिया गया ।

पर ब्यंगे स्वाया में दरार को घाटन के लिए काम तेजी से उठाये

जाते रह । ज्योहा सभैवाहक साल फीजियो व नदी पार करने की खबर लेकर अपना घोना दौड़ाता आया, ज्योही स्टाफ हेडक्वार्टस में कार्याधिकारी ने कुदिनोव और मलखोव को बुला भेजा । बारगिस्वाया रेजीमट की टुकड़ियाँ चोर्नी गाराखोवका और दुमरोवका से बुलाई गई । प्रिगोरी मलखोव ने पूरी बारवाई की ग्राम ब्रमान सँभाल ली । उसने तीन मौ सलवारब कश्चाक येरेस्की गाँव के सामने भोक दिए ताकि बायाँ याजू मजबून हो सक और अगर दुश्मन पूव की ओर ॥ व्योस्काया नेने की कोशिश करे तो तातारस्की और ल पाज्जी के कश्चाक दुश्मन का घबका भेनकर अपने पैर जमाये रह सकें । प्रिगोरी ने व्योस्काया के विन्नी स्वयसेवकों को पश्चिम की तरफ रवाना किया बाज्जी स्क्वडन की मदद के लिए चिर प्रभेग की एक पैल टुकड़ी भेजी घाठ मणीनगर्ने सतरे व इलाके में जमवाइ और कोई दो घंटे सवरे घुड़मवार फीजियो की दस टुकड़ियाँ लेकर खुद जगम के सिरे पर जा जमा और साल फीजियो पर हमला बोलने के लिए सुबह का इंतजार करने लगा ।

दूमरी पार व्योस्काया के स्वयसेवकों की टुकड़ी ने जंगल में भाते हुए, दोन के बाज्जी वाले किनारे लक की मजिल तय कर डाली । पर रात अंधि आसमान में चमकता ही रहा कि उसकी टक्कर बाज्जी के पीछे हटते लोगों से हो गई । टुकड़ी के लोग ने इन लोग को गलती ॥ दुश्मन समझा इसलिए कुछ देर तक इन पर आग बरसाई और फिर भाग पड़े ॥ व्योस्काया को चरागाह से भलगाने वाली बड़ी भील के पास पहुचने पर इन्होंने हड़गडी में जूने बगडे किनारे पटके और तर तरकर उस पार पहुँच । गलती जल्दी ही पकड़ गई । लेकिन साल फीजियो के व्योस्काया पहुचने की खबर हवा की रफ्तार से, बहुत पहले ही हर तरफ फली मिली । नतीजा यह हुआ कि तहखाना में छिपे चरणार्थी गाँव छोड़-छोड़कर उत्तर की तरफ भाग और हर जगह यह अपवाह फनाते गये कि साल फीजियो ने दान पार कर ली है मोर्चा तोड़ डाला है और व्योस्काया पर चढ़े चले जा रह हैं ।

प्रिगोरी का स्वयसेवकों के भागन की खबर मिल गई और

घासमान म दिन का उजाला छिटकना गुरु ही हुआ कि वह घोड़ा दोडाता दोन तक जा पहुँचा। इम बीच स्वयसेवका न अपनी गलती समझी और जोर जोर से बातें करत हुए साइयो की ओर लौट। गिगोरी उनके एक दल के पास पहुँचा और व्यग्न करते हुए बोला—
“भील तैरकर पार करने म बहुत लोग डूब गय क्या?”

सिर से पैर तक पानी मे तर बतर एक राइफमैन ने चलन चलते अपनी कमीज उतारी और स्वर्णों के उतार-चढ़ाव के साथ जवाब दिया—“हम सब तो पाइक मछलियों की तरह तरे। डूबते आखिर क्यों?”

“वैसे गलतियाँ हर घादमी करता है।” सिर्फ पैट पहले एक दूसरा घादमी सूत्रों की भाषा मे बोला—“मद हमार ग्रुप-कमांडर की ही लो। सचमुच डूबन डूबत बचा। बात यह हुई कि उमने पट्टियाँ खोलन मे खच होने वाले वक्त को बचान के खयाल से जूते नहीं उतारे और पानी में हिल गया। तैरल सगा तो पट्टिया बीच म ही खुस गई और पैर म उल भने लगी। फिर तो किस तरह गला फाडकर चिल्लाया वह। काई एक वस्तु दूर होता तो भी उसकी आवाज सुन लेता।”

गिगोरी ने स्वयसेवकों की टुकड़ी के कमांडर की खोज और उसे हुक्म दते हुए बोला—“इन लोगों की जगल के सिरे पर ले जाओ और इह इस तरह रखो कि जल्दतर पढ़ने पर ये बाहर से साल फौजियों की कतारा का घेर सकें।” इसके बाद उसन अपना पादा मोड़ा और अपने स्वैडन की ओर बढ़ा।

सदक पर उसे स्टाफ का एक अदली मिला। घादमी न घोड़े की रास्ते खार्ची और सतोंप की साथ सेते हुए बोला—“मैं हलाकान हो गया आपको खोजते खोजते।” और घोड़े के पुट्ठा और बाजुधो से देखन से सगा कि जानवर को ताबडतोड दीडाया गया है।

“क्यों? जान क्या है?”

“स्टाफ ने आपको पाए खबर भेजी है कि तातारस्की कम्पनी के लोग न अपनी अपनी साइयाँ छोड दी हैं और वे, घिर जाने के डर से, बहुत मैदान की तरफ पीछे भाग रहे हैं। खुद कुदिनाव न कहा है कि आप

फौरन हो वहाँ पहुँचें।”

प्रिगोरी ने ताजे म-साजे घोड़ा पर सवार, कज्जाका के टूट क साथ जगन पारकर सड़क का रास्ता लिया और कोई बीस मिनट की घुड़दौड़ के बाद वह गोली इलमेन की भील के इलाक़े में पहुँच गया। बाइ और तातारस्की व घवराये हुए लाग चरागाह व आरपार दीहते दीखे। इनमें से मोर्चे व अनुभव वाल लोग या सयानी उम्र व दूसरे कज्जाक भील व पास ही पास रहने और नगी किनारे के झाड़ झाड़ियों की छाड़ सेते इरमीनान से जात रह। लेकिन बानी में से क्यातातर लोगो व मन में मिफ़ एक इच्छा पलती रही कि जैस भी हो जल्दी में जल्दी जगल तक पहुँच चला जाए। बस तो ऐसे सार लोग आगे आगे भागते रह और उ हौन मनीनगनो की बीच बीच में बरसती गोलियों की एक भी चिंता नहीं की।

“पीछा करो दुनका। जरा जमाओ ता इन पर चाबुक।” प्रिगोरी ने गुस्से में पनकें भपकन हुए चिस्ताकर कहा और सबसे पहले खुद अपने गाँव के लोग का पीछा किया। घोड़ा हवा की रफ्तार से दौड़ाया।

क्रिस्तोनिया झूमते और भचकते हुए नाप के-से आगाइसे, जाता नजर आया। अभी पिछली शाम का मछली मारते समय सरपत से उमकी एडी बटून ही घुरी तरह फट गई थी, इसलिए वह शाम दिनों की तरह भाग नहीं पा रहा था। सो प्रिगोरी अपना चाबुक सिर से ऊपर तान हुए उसके बराबर आ गया और घाड़े के कन्मा की टपाटप काना में पड़ा तो क्रिस्तोनिया ने मुँह देखा और अपनी रफ्तार बढ़ा दी।

“गोड़े कहीं जा रह हो? रुको रुको मैं बहता हूँ रुको।” प्रिगोरी चीखा मगर कोणिन बेसार ही गई। क्रिस्तोनिया न रुकने की बात कर न सोची और बग ही अजीब लगा कि ऊँट की तरह उच्चक चक्कर और तेज़ी से चलना शुरू कर दिया।

इस पर प्रिगोरी व इतना गुस्सा आया कि वह आगे आगे में न रहा। उसने बटून ही घुरी गाली दी घाड़े को और तेज़ी से आगे बढ़ाया,

बराबर आने पर सत्तोप की मास ली और क्रिस्तोनिया की पमीने से नहाइ पीठ पर भरपूर चाबुक जमाया । क्रिस्तोनिया जमीन पर बठ गया और धीरे धीरे सावधानी से पीठ सहलान लगा ।

ग्रिगोरी के साथ के बरजाव अपने घोड़े दौड़ाते आगे निबल गये और भागते हुए लोगो को रोक्ने लग । मगर, चाबुक उठाने नहीं धलाया ।

“चाबुक जमाओ चाबुक जमाओ इन लोगो पर ।” ग्रिगोरी ने दस्तकारी के काम वाला अपना चाबुक हिलाते हुए फटी भी आवाज में चिल्लाकर कहा । इसी समय उसका घोड़ा विडवा, पीछे हटा और आगे बढ़ने से इन्कार करने लगा । ग्रिगोरी ने जैम-सैस उस काबू में किया और सामन भागन लगा सब पहुँचा । बगल से गुजरा तो उसकी निगाह एक भाड़ी के पास ठिक्कर चुपचाप मुन्करान स्तोपान अस्ताभाव पर पड़ी । साथ ही अनीकुदका हँसी से दाहरा होना नजर आया । उसने अपने हाथ को तुरही बनाई और तीखी, औरतों की-मो आवाज में चीखा—‘मादया हर आमी अपनी जान के लिए जिम्मेदार होगा । साल पौजी आ रह है । बस, ता उह पकड़कर छोडा ।’

अब ग्रिगोरी ने रड्मरी जकिन से सस एव दूसरे गाँव वाले के पीछे घोंटा दौड़ाया । यह गाँव वाला यकान का नाम लिय बिना, फुरती से दौड़ना खिलसाई पडा । आदमी के गाल बचे बटन ही जान जाने से लग पर ग्रिगोरी का उस पहचानन का मौका नहा मिला और वह कुछ दूर पीछे से ही चिल्लाया—ठहरो ओ मुतिया के बच्चे, ठहर जाओ, बरना मैं तुम्हारा टुन्ड-टुन्ड कर डानूँगा ।

सहगा ही जकिन में लम गाँव वाले ने अपनी चाल घीमो की और फिर रुक गया । वह एक खाम ढग से मुडा और उसकी आंखो से ज्यादा-सा उपाता नजरन बरसी । ग्रिगोरी इस मुद्रा से अपने बचन से ही परिचिन था, इसलिए बरजाव के नाब-जबगा पर पूरी तरह निगाह पडने के पहन ही उसने अनुमान लगा लिया कि हान हा यट तो मरे पाया है ।

पत्तली के गालों की खाल वाली ‘तो, तुम्हारा अपना बाप

कुतिया का बच्चा है क्या ? यानी तुम अपने बाप के ही टुकड़े टुकड़े कर डालने को धमकी दे रहे हो ।

उस अपने ऊपर कोई नियंत्रण न रहा और उसकी भाँखें इस तरह क्रोध से जलने लगी कि गिगोरी का सारा गुस्सा देखते देखते काफूर हो गया । उसने भटके से घाँट की राखें खींची और जोर से बोला— 'मैं तुम्हारी पीठ तो पहचानता नहीं । इस तरह भासमान सिर पर क्या उठा रहे हो, पापा ? '

'पहचानता नहीं क्या मतलब तुम्हारा ? यानी, तुमने अपने बाप को नहीं पहचाना ? '

बुजुर्गी कुछ ऐसे गसत और बेहूँसे ढंग से छू गई कि गिगोरी हँसता हुआ अपने पिता की सीध में भाया और उस समझाते हुए बोला— 'पापा पागल न बनो ! तुम एक ऐसा कोट पहन रखा था जो मैंने तुम्हारे बदन पर पहल कभी देखा ही नहीं । फिर तुम भागे जा रहे थे रेश के घोड़े की तरह । हगगा की तरह भक्क भी तो नहीं रह सके । ऐसे में भला मैं तुम्हें कैसे पहचानता ? '

घर और बाहर के पहले के दिनों की तरह पैंतेली एक बार फिर शांत हो गया । पर हाँकता वह बुरी तरह भव भी रहा । फिर भी, अपने ऊपर और ज्यादा कामू पाते हुए बटे की हॉ में ही मिनाने हुए बोला— 'तुम ठीक कहते हो । कोट गया है । मैं अपनी भेड़ की खाल में बँसने में से लिया है । भेड़ की खाल भारी होती है और इसलिए रास्ते में तबली-पदेह लगती है और जहाँ तक मेरे भवकन का सवाल है भवकन में लिए शक नहीं है । 'गाहजा', यहाँ भवकन का तो सवाल ही नहीं उठता । यानी मोत हमारी आँखों में भाँखें डाल रही है और तुम लगे घर को लेकर गाल बजा रहे हो

'सर मोत अभी कोसा दूर है । थोड़ा लौटो पापा । और तुमने अपने कारतूस अभी तक नहीं फेंके हैं न ? '

'तबिन, हम सौटकर वहाँ जायें ? बूढ़ न घणा से मरकर विरोध किया ।

एम पर गिगोरी ने अपनी आवाज़ ऊँची की और एक एक शब्द

पर बल देते हुए आगे दिया—'मैं तुम्ह पीछे लीटन का हुक्म देता हूँ। पता है कि लडाई के मैदान में कमांडर का हुक्म न मानने की सजा क्या होती है ?'

शब्दा का प्रभाव पडा। पैतेली न बचे पर लटकी राइफल ठीक की, लाख न चाहत हुए भी पीछे लीट पडा और एक ओर धीरे चलते बूढ़े के बराबर पहुँचते ही बोला—'इस जमाने में हमारी भीलादें ऐसी होती हैं। अपने बाप की इज्जत करने के बजाय या लडाई की मुसीबत से छुटकारा दिलाने के बजाय, भीलाद उल्टे उसे लडाई के ऐन मुह में ढकेलने की कोशिश कर रही है। हाँ भाई हाँ। एक मेरा बेटा प्योत्र था आममान वाला उस पर हमेशा रहम करे। इससे कहीं बेहतर या मित्राज का ठण्डा था। मगर यह बेवकूफ तो बिलकुल ही भलग है। माना कि डिबीजनल कमांडर है, और दूसरी तमाम बातें हैं और ठीक ही है। यह तो भाऊ चूट की तरह तुनुकमित्राज है। मुझे खरा भी ताज्जुब न होगा, अगर भरे इस बुढापे में यह मुझे भीची के इस्तमाल की कीली से काच कीचकर भट्ठी में झोक देगा।'

उचित बात तातारस्का के कज्जाकी की समझ में आसानी से आ गई है। प्रिगोरी ने पूरी कम्पनी जमा की, उसे किसी ढकी हुई जगह स गवा और फिर घोड़े पर बैठे ही-बैठे सल्ल लहजे में बोला—

'लाल फीजियों ने नदी पार कर ली है और वे व्यंगे-स्काया पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। दोन के किनारे लडाई शुरू हो गई है। यह सारा कुछ कोई मजाक नहीं है, और मैं तुमको बेकार में भागने की सलाह नहीं दूँगा। अगर तुम सब दूसरी बार भागने की कोशिश करोगे तो मैं मरे-स्की के घुड़सवार फीजियों का हुक्म दूँगा और वे तुम्हें बाटकर फेंक देंगे।' उसने अपने गाँव के लोगों की भीड़ पर एक नज़र दौड़ाई और उनके तरह तरह के लिबामो पर दृष्टि गड़ाते हुए स्पष्ट धूँसा स कहा—'तुम्हारी कम्पनी में कुछ बूढ़ा करकट लाग जमा हो गए हैं, और यह सारी घबराहट वे ही फैला रहे हैं। क्या जानकार बहादुर हो तुम लोग। लडाई का म्यान छोड़कर भागे जा रहे हो, तुम्हारी पतलून खराब हुई जा रही है। इस पर भी तुम अपने की कज्जाक कहते हो। और बड़े

झुगुर्गी, तुम्हारी यह हिम्मत 'तुमन खुद ही कहा है कि तुम लडोगे, इस लिए अब टांगो व बीच खोपडियाँ अडाने के कोई मान नहीं हात । तो घस टूट आडर में डबल माच करते हुए उन भाडिया तक पहुँचो, फिर उनके बीच में दोन का रास्ता पकड़ो, बाद में दोन के किनारे किनारे सम्पन्नोवस्की कम्पनी की तरफ बढ़ा और कम्पनी से मिलने पर लाल फीजिया पर घावा बाँस दो । बिबक माच 'और देखो चौकस रहना ।'

तात्तारस्की व गाँव के लोगो ने चुपचाप पूरी बात सुनी और फिर वे उसी तरह भाडिया की तरफ बढ़ चल । प्रिगोरी और उसने साथ के बरखाव घोड़े दौड़ाकर हवा से बातें करते निकल गये । बूढ़े ने, मायूसी से, लम्बी लम्बी साँस लते हुए उनकी तरफ मुटकर देखा । पत्तेली की बगल में चलते बूढ़े ओबनिजोव ने तारीफ करते हुए कहा—'ठीक है मगर उस आसमान वाले का लाख लाख धुक कि उसने तुम्हें ऐसा बहादुर, नाभी जवान बना दिया है । असली सूरमा है । कसा चाबुक जमाया उसने क्रिस्तेनिया की पीठ पर । हर आदमी व पैर जहाँ थे, वही जमफर रह गया ।'

ओबनिजोव की बात ने पत्तेली की पित सुतल भावनाओं को गुन्गुदाया और बूढ़ा गदगद स्वर में बोला— 'यह बहन की बात नहीं । किसी का ऐसा दूसरा बेटा खोजने के लिए आदमी को बड़ा दुनिया भेजना पड़गी सोना मँडला से भरा हुआ है इतने मँडल जीतना कोई मजाक नहीं है क्या ? इसके मुकाबल प्योत्र को लो । वह भा मेरा ही बग था और पहना बेटा था मगर ऐसा नहीं था । मिता में गर्मी नहीं थी और वही १ क्लास उमम बुद्ध ने बुद्ध कभी जम्म री । कमीज के नीचे तिल औरत का था । लेकिन यह दूसरा बेटा भरा प्रिगोरी, बिलकुल भरी तरह है जान और जोग तो उसमें सुभन भी प्याग है ।

प्रिगोरी दुःख का नार बचाने हुए अपने आगे टूट व साथ साथ कानमीक घाट तक आ पहुँचा और जगल में पहुँचने पर उमन और उसका साथ व सागा १ भगन को पूरी तरह मुरगिन समझा । लेकिन, दूर की पयवभन चौकी से सात फीजियों ने इ ह देग लिया और एक टीम ने

अपनी तोपा के दहाने खोल दिए। पहला गोला सरपत के पीछे के सिरों के ऊपर से सरसराता निकला और किसी दलदली खड्ड में जा गिरा, फूटा नहीं। लेकिन दूसरा गोला सड़क के पास ही, बूढ़े वाले देवदार की नगी जड़ों के बीच फूटा तो भाग सी छिटकी और घड़ा के सक्ज्जाका के कान के पर्दे फटने लगे। वे मिट्टी और सड़ी हुई लकड़ी के टुकड़ा की बोझारों से नहा उठे।

इसी समय घोड़े की दुमकी के पास किसी गीली चीज के पड़ाक से गिरने की आवाज हुई, तो प्रिगोरी अपने आप आगे की ओर झुक गया और उसने अपनी आंखों पर हाथ की छाड़ कर ली।

घड़ाने से जमीन हिल गई। सक्ज्जाको के घोड़े बिल्के और कूल्हों के बल बल गए, मगर फिर, जैसे कि किसी कमान पर, आगे की तरफ साबड़तोड़ भागे। परंतु प्रिगोरी का घोड़ा भयानक रूप से पीछे हटा, कंधे पटा और घोड़े घोड़े लुहकन मा लगा। प्रिगोरी ने बाल्टी से कूदकर घाड़े की लगाम पकड़ ली। अब दो गोले और हवा में सरसराते गुजरे और फिर जंगल के सिरे पर सनाटा हो गया। बारूद का धुर्माघास की पल्लियां पर जम गया। आसपास से ताजी उल्टी मिट्टी सक्की की चैलिया और अधमड़ी लकड़ी का सकेत मिलने लगा। दूर मुरमुट में मगपाई बिडिया उत्सुकता से चहचहाती रही।

प्रिगोरी का घोड़ा हीसा। उसके चरचरात हुए पिछले पैर घँसने लगे। दद से दात निकल आये गदन ऐंठ गई और मखमली भूरे नधुनों से गुलाबी से भाग के बुलबुल फूटने लगे। घोड़े का पूर का पूरा बदन घुरी तरह कापने लगा और नीचे की खाल रह रहकर सिहरने लगी।

“काम तमाम हो गया क्या?” एक धुडसवार करवाक ने जोर से पूछा। प्रिगोरी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह घोड़े की बुभ्ती हुई आंखों में आँसू ढाले रहा। उसने तो जन्म तक नहीं देखा। जरा दूर-भर हट गया। इस पर घोड़े ने भटके में आगे बढ़ने की कोशिश में अपने को समेटा, और फिर सहसा ही घुटना के बल गिर पड़ा। इसके साथ ही उसकी गदन इन तरह झूल गई, जैसे कि वह मालिक ने किसी

बुसुर के लिए माँकी माग रहा हो। इसके बाद सोखले ढग से कराहत हुए वह बाजू के बल पुनः गया और उसने सिर उठाने की कोशिश की। पर साफ है कि उसकी ताकत नुट चकी थी। फिर, बँपकेंपी घीरे-घीरे खत्म हो गई धीरे धीरे चमकी कि चमकवर रह गई और गदन पत्तीने में नहा उठी। बबल टवना के पास नज़ हल्के हल्के बजती लपकी और काठी का बंद घीरे घीरे कापना नज़र आया।

प्रिगारी ने जानवर की बाइ बाजू की तरफ निगाह दोटाई तो एक सहारा ज़रूम नज़र आया और ज़रूम से काले खून की धार उमड़ती दीखी। उस बीच दूसरा कपड़ाक घोड़े से नीचे उतरा। प्रिगारी की आँखा से आँसू बहने लगे। उसने उह पाछा नहीं और घटक घटकर बोला— 'गोली मारकर एग बार मही इस तरह कर दो।' उसने अपनी आँखें राइफल कपड़ाक की ओर बढ़ाई और उसके घाँड़े पर सवार होकर अपने स्क्वडन के ठिकान की तरफ खाना हो गया। वहाँ आकाश लड़ाई चालू मिली।

साल सना के टूपा ने तटके नये निरे से हमला कर लिया था। धु ध के पसार के बीच उनकी कतारें उठीं और चुपचाप खेने-स्काया की दिना में बढ़ी थीं। दाइ और, बाइ के पानी से लबालब एग लड्डू न गध-भर की उनका रास्ता रोका पर दूसरे क्षण वे पानी में हिल गए और गोलीयो बगरा के अपने पैर और राइफलें हाथों में ऊपर उठाये ही-उठाये इस पार से उस पार पहुँच गए।

सोही दर बाद, दोन के किनारे की गहानियों पर से चार घटरियाँ गरमने लगीं। फिर तोषो के गोनी ने गुरे जंगल की अपनी लपेट में लिखा और बि ठेहियों का धार से भी आग बरसने लगी। अब साल पौनी अपनी राइफलें जमीन पर घसीटत हुए माच करन के बजाय दोहन रहे। उनगे बोर्ड घाघ वस्त के प्रागन पर तोषा के गोना के घड़ा होते घीरे उनगे टुवड हवा में उन्न रह। गोव पडा का तार-तार करते रहे घीरे पड चरमराकर जमीन पर गिरने रहे। घुरों के सफ़्त बादन आगमान में उमड़न रहे। साथ ही दो मगोनगनें भी ज़रा-ज़रा दर पर गटखटाती रही।